USSR and other countries producing heavy water is not available. By improving performance of our heavy water plants, the cost of production is being brought down progressively.

Plea against Construction of Tehri Dam Project

*39. SHRI SURENDRA SINGH THAKUR: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether Government are aware of the plea made by some environmentalists against the construction of Tehri Dam Project;

(b) if so, what are the details thereof;

(c) whether Government would consider their plea against construction of Tehri Dam; and

(d) if so, by when and in what manner?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRIMATI MANEKA GANDHI): (a) Yes, Sir.

(b) The plea against the Tehri Dam Project is based on apprehensions regarding the safety of the dam, displacement of large population and other adverse environmental impacts and economic viability considerations.

(c) and (d) The Tehri Dam Project was approved by the Planning Commission in 1972 when no environmental clearance was required. The scope of the project was subsequently enlarged. On the basis of a review ordered in 1980, a Working Group has submitted its report on the environmental aspects of the project. The project authorities have also submitted modified environmental action plans. Amongst others, the findings of the Working Group and the views of the environmentalists are kept in view for environmental scrutiny of the action plans.

Acquisition of Fire-Finding Radars by Pakistan

*40. SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Pakistan have acquired the latest sophisticated fire-finding radars; and

(b) if so, what steps have been/are being taken to counter the same?

THE PRIME MINISTER (SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH): (a) Yes, Sir.

(b) On the basis of regular appraisal of threats to the nation's security, appropriate measures are taken to ensure adequate defence preparedness. Divulging further details will not be in the interest of national security.

'लेब एट गाजियाबाद स्टाफ इन रुड़की' शीर्षक वाला समाचार

@50. **श्री राम जेठमलानी :**
श्री राम नरेश यादव :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 25 सितम्बर, 1988 के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में 'लेब एट गाजियाबाद स्टाफ इन रुड़की' शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) क्या यह सच है कि गत चार वर्षों से स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग रिसर्च सेंटर, गाजियाबाद में कोई शोध कार्य नहीं हुआ है और इस संस्थान का वार्षिक व्यय कितना है ;

(ग) यदि हां, तो इसका कारण क्या है और यदि इस संस्थान को कोई कार्य दिया गया है तो उक्त अवधि के दौरान इसकी क्या-क्या उपलब्धियां रही हैं ; और

(घ) भविष्य में इस संस्थान के कार्यकरण को सुचारू तथा व्यवस्थित बनाने के लिए सरकार की क्या योजना है ?

@ पूर्वतः अतारांकित प्रश्न 16, 22 दिसम्बर, 1989 से स्थानान्तरित ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (प्रो० एम० जी० के० मैनन): (क) जी हां ।

(ख) जी, नहीं । गत चार वर्षों के निर्माण सहित वार्षिक व्यय इस प्रकार है :—

1986–87—300 लाख रुपए

1987–88—345 लाख रुपए

1988–89—287—लाख रुपए

1989–90—230 लाख रुपए ।

(ग) प्रश्न ही नहीं उटता । प्रयोगशाला की कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां इस प्रकार हैं :—

1. राष्ट्रीय पेय जल मिशन में भाग लेना ।

वर्षा जल कृषि और भण्डारण ढांचे (संरचनाएं)

पुनर्स्थापित करने योग्य जल संसाधनों का संवर्धन करने के लिये खेती करने हेतु वर्षा जल भण्डारण ढाचों के लिए प्रयोगशाला ने सस्ती फैरोसीमेंट प्रौद्योगिकी का विकास किया है । देश के विभिन्न राज्यों में विभिन्न स्तरों पर प्रौद्योगिकी का प्रचार किया जा रहा है । फोनिक हैल्थ और इंजीनियरी विभाग / (पी० एच ई डी)/ग्रामीण विकास विभाग (डी आर डी) और स्वैच्छिक अभिकरणों से लिए गए 12 राज्यों के 500 प्रतिभावान व्यक्तियों को इन में प्रशिक्षित किया गया है :—

—जलग्रहण क्षेत्रों के रूप में छत, प्लेटफोर्म और पहाड़ी ढलानों का का प्रयोग कर वर्षा जल संग्रह करने की प्रणालियों का निर्माण ।

* 10,000 लीटर क्षमता तक के जल भण्डारण फैरोसीमेंट टैन्कों की ढलाई और निर्माण ।

*भूमिगत टेंक निर्माण और ईंट तथा पत्थर की चिनाई वाले टेंकों पर फैरोसीमेंट लाइनिंग के लिए निर्माण और गर्स लाइनिंग प्रणालियां और सैमी मैकेनाइज्ड प्रक्रम ।

2. तिलहनों पर प्रौद्योगिकी मिशन में भाग लेना ।

तिलहन के लिए फैरोसीमेंट भण्डारण कोष्ठ (बिन)

20 टी क्षमतावाले फैरोसीमेंट बिन्स (कोष्ठों) का अभिकल्पन किया गया है और निर्माण प्रौद्योगिकी को पक्का किया गया है । अधिक क्षमता वाले बिन्स (65 टी तक) का विकास और परीक्षण किया गया है ।

1000 टी का एक प्रायोगिक यूनिट नागपुर, राजस्थान में नेशनल इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट कारपोरेशन (एन आई डी सी) द्वारा बनाया जा रहा है ।

3. गणितीय माडलिंग और सोफ्टवेयर विकास

प्रयोगशाला ने निम्नलिखित के विश्लेषण और अभिकल्पन के लिए कम्प्यूटर सोफ्टवेयर का विकास किया है :—

*संचार ढांचों

*परिवहन ढांचों

*भण्डारण ढांचों

*आवास और कार्यालय भवन (ऊंची उठने वाली संरचनाओं)

*औद्योगिक ढांचों ।

संस्थान ने इनके लिए हैंडबुक्स (छोटी किताबें) और अभिकल्पन सहायता भी विकसित की हैं :—

*रीइनफोर्सड कंकरीट मम्बरसों के लिमिट स्टेट डिजाइन

*स्लेब (पटिटकाओं) की डिजाइन

*ब्रिज डेक स्लैब का डिजाइन ।

4. ताजमहल के सुपर स्ट्रक्चर का निष्पादकता अध्ययन :—

सुरक्षा और स्थिरता की जांच के लक्ष्य को ध्यान में रखकर भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण ने संरचना इंजीनियरी अध्ययन का कार्य केंद्र को सौंपा है । गुम्बद की दाब स्थितियों की विस्तृत जांच की गई है और आगे का कार्य प्रगति पर है ।

(घ) प्रश्न ही नहीं उठता ।